RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2021-23

# पिघलता हिमालय

वर्ष 38 अंक 46 हल्द्वानी सम्वत् 2080 सोमवार 24 अप्रैल 2023 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

# बेशर्मी की हद हो गई

## नैनीताल जिले में कई स्कूलों को नोटिस जारी

**पि.हि.प्रतिनिधि**

शिक्षा व्यवस्था को पटरी में लाने के सारे यत्न विफल हो रहे हैं। बेशर्मी की हद हो गई है। माना कि निजी स्कूलों ने सुविधाओं के बल पर आम जनता को रिझाया है लेकिन इसके साथ ही जिस प्रकार की लूट मचा रखी है वह सरासर अन्याय है। यही कारण है कि शिक्षा के मन्दिरों को ईमानदारी से चलाने वालों को भी भला-बुरा सुनना पड़ता है। लूट-खसोट करने वाले स्कूलों के कारण पूरे शिक्षा तन्त्र की बदनामी हो रही है। मच रही लूट पर भड़के अभिभावकों ने प्रदर्शन किया है। रामनगर में उत्तराखण्ड जन अधिकार संगठन ने निजी स्कूल संचालाकों पर एनसीईआरटी के बजाय महंगी प्राइवेट किताबें लगाने का आरोप लगाते हुए ऐसे स्कूलों की मान्यता रद्द करने की मांग की है।

निजी स्कूलों पर मनमाने ढंग से महंगे दामों पर निजी प्रकाशकों की पुस्तकें और ड्रेस खरीदने के लिये मजबूर करने की शिकायतों पर शिक्षा विभाग ने प्रदेश भर में अभियान चलाया है। शर्म की बात है कि शिक्षा व्यवस्था में धन्धेबाजी और कालेकारनामे हो रहे हैं। इनकी शिकायत होने से पहले कोई जाँच नहीं होती है। और जब जाँच हो रही है तो पकड़ में आ चुके स्कूलों को बचाने के लिये जोड़तोड़ शुरु हो जाती है। फिलहाल ताबड़तोड़ छापेमारी और पचास से अधिक स्कूलों को नोटिस भेजे गये हैं। याने की ढंग से जाँच-पड़ताल हो जाए तो 80 प्रतिशत स्कूल गोलमाल करते मिल सकते हैं। हल्द्वानी के गौलापार क्षेत्र में तो हद ही हो गई है। ग्रामीण परिवेश में बेहतर करने का दावा करने वाले स्कूल ने मनमर्जी के रिकार्ड तोड़ डाले हैं। बताया जाता है कि यह स्कूल मोटी फीस के अलावा अपने फैलाव को लक्ष्य मानकर चलता है।

नैनीताल जिले की ही बात करें तो तमाम स्कूलों को नोटिस भेजे गये हैं। सीईओ ने नियमों का उल्लंघन करने पर कारण बताओ नोटिस भेजने का आदेश खण्ड शिक्षाधिकारियों को दिया। छापेमारी में सीईओ ने निजी प्रकाशकों की महंगी पुस्तकें बच्चों के पास देखी। उन्होंने पाया कि जो पुस्तक 150 में मिल जाती है उसे 350 रुपये तक की कीमत पर बेचा गया है। इस पर शिक्षाधिकारी बेहद नाराज हैं उन्होंने कहा कि स्कूलों को नोटिस भेजे जा रहे हैं और उचित जवाब नहीं मिलने पर मान्ता निरस्त करने को लेकर उच्चाधिकारियों को कहा जायेगा।

जिन स्कूलों को नोटिस भेजे गये हैं उनमें- सेन ग्लोबल स्कूल लोहरियासाल तल्ला

शेष पृष्ठ 2 पर

## नये प्रवेश का उत्सव और धापेमारी लेकिन धन्धा चौखा

**पि०हि०प्रतिनिधि**

उत्तराखण्ड के तममा विद्यालयों में नये प्रवेश का उत्सव इस बार प्रीतिभोज और गीत-संगीत के साथ मनाया गया। सरकारी स्कूलों से कम होती विद्यार्थी संख्या को देखते हुए ऐसे प्रयोग किये जाने लगे हैं ताकि कुछ नयापन और वातावरण बन सके और विद्यार्थी संख्या में वृद्धि हो। इसके अलावा प्राइवेट स्कूलों की पुस्तक इत्यादि अनाप-सनाप रेट में बिक्री की सूचना पर जगह-जगह प्रतिष्ठानों में छापे मारे गये। बताया जा रहा है कि कई ऐसे स्कूल जो इस प्रकार की धन्धेबाजी में सीधे लिप्त थे वह छापेमारी के समय अपनी सामग्री को दांए-बांए कर चुके थे। इसके अलावा स्कूलों और प्रतिष्ठानों की मिलीभगत से अभिभावकों पर यह दबाव बनाया गया कि फलां दुकान से ही पुस्तकें-ड्रेस सामग्री ली जाए।

स्कूलों की मनमर्जी के खिलाफ कई जगह प्रदर्शन भी हुए हैं और यह भी सुनने में आ रहा है कि प्रदर्शन की आड़ में स्कूल प्रबन्धकों को परेशान करने वाले दलाल भी सक्रिय रहते हैं। कुल मिलाकर प्रवेश उत्सव और छापेमारी के अलावा बहुत कुछ अभी भी हो रहा है। शिक्षा व्यवस्था में सुधार और इसकी आड़ में होने वाले गोरखधन्धे रोकने के लिये सख्ती जरूरी है।

## यात्रा सीजन में इन्तजाम फेल

# सड़कें जाम, हांफते लोग, रोक नहीं

कैंची धाम में पार्किंग। छाया- पि0हि0

**कार्यालय प्रतिनिधि**

ग्रीष्मकालीन यात्रा सीजन पर पहाड़ की सड़कें जाम होने से यात्री हांफ रहे हैं। पुलिस प्रशासन की ओर से यात्रियों को सुविधा के तमाम दावे किये जा रहे हैं लेकिन वीआईपी ड्यूटी व अन्य कार्यों के कारण भी ध्यान बंटा रहता है। यात्रा सीजन में मुख्य रूटों को व्यवस्थित करने की योजना पूरी तरह धराशायी दिखाई दे रही है क्योंकि बाहर से आने वाली भीड़ को नियन्त्रण करने के लिये मार्ग में मॉनीटरिंग नहीं हो रही है। कई किलोमीटर तक जाम होने के कारण यात्रियों और स्थानीय लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

चारधाम यात्रा के शुभारम्भ से पहले ही ऋषिकेश हाईवे से जाम का सिलसिला बन चुका था जो अभी तक जारी है। जगह-जगह जाम से हांफते लोगों की कोई सुनवाई नहीं है। जाम को हटाने लिये जब तक पुलिस बल पहुँचता है तब तक कई किमी तक जाम की बिकराल बन चुका होता है। ऐसा ही देहरादून-मसूरी मार्ग पर हो रहा है। पूर्णागिरी मेले के कारण टनकपुर शहर बेहाल बना हुआ है। यहाँ पर यात्री वाहनों के अलावा उपखनिज लादकर चलने वाले शक्तिमान ट्रक, डम्फर के कारण बाजार में कई बार यात्रियों व स्थानीय लोगों को परेशान होना पड़ रहा है। फुटपाथ भी जरूरत से ज्यादा कब्जे कर लिये गये हैं।

भीमताल-भवाली-कैंच-अल्मोड़ा हाईवे पर जगह-जगह जाम से दिक्कत हो रही है। सबसे ज्यादा परेशानी कैंची मन्दिर के पास ही है क्योंकि पार्किंग सुविधा के बावजूद बाहर से आने वाले वाहन सड़कों के किनारे खड़े हो जाते हैं जिससे जाम रहता है। इस बीच पुलिस जाम से मुक्ति को नया प्लान बनाया है। साथ ही डीएम ने निरीक्षण करते हुए बताया कि कैंचीधाम का मास्टर प्लान के तहत विकास किया जायेगा। भीड़ देखते हुए अस्थाई रूप से नये बैली ब्रिज का निर्माण किया जायेगा। यात्रा सीजन पर अस्थायी पुलिस चौकी भी रहेगी।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

## इतनी बड़ी गड़बड़ी कैसे?

**सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग उत्तराखण्ड की सूचना निदर्शिनी में इस बार समाचार पत्र और उनके सम्पादक/प्रतिनिधियों की सूची में गड़बड़ी पाई गई है। पुराने समाचार पत्रों की सूची में शामिल पिघलता हिमालय का नाम होना हमें बहुत अच्छा लगता है परन्तु इसमें सम्पादक/प्रतिनिधि के स्थान पर हेमेन्द्र मलिक का नाम अंकित किया गया है, साथ ही उनका मोबाइल नम्बर भी छापा गया है। सूचना विभाग जो प्रेस और सरकार के बीच तालमेल बनाता है और सही सूचनाओं का आदान-प्रदान करता है, इतनी बड़ी गड़बड़ी कैसे कर सकता है?**

**चाहे जिस भी स्तर पर यह गड़बड़ी हुई हो, गड़बड़ तो है ही। आरएनआई की मान्यता से भरापूरा 'पिघलता हिमालय' सन् १९७८ में स्थापित समाचार पत्र है और नियमित रूप से जनता के बीच ऑनलाइन-ऑफलाइन दिखाई देता है। ऐसे में विभाग की ओर से इस प्रकार की गड़बड़ी की उम्मीद नहीं की जा सकती थी। सूचना निदर्शिनी में तमाम जनप्रतिनिधियों व प्रेस के नम्बर होते हैं और यह सार्वजनिक होती है।**

**इतना सब होने पर भी यह तो खुशी हो ही रही है कि मीडिया को मण्डी बनाने और इसके फैलने के बावजूद जुवान पर चढ़ा नाम 'पिघलता हिमालय' का उल्लेख किया गया। इसके लिये पिघलता हिमालय ने महानिदेशक सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग को पत्र देकर अवगत करा दिया है। ताकि इस प्रकार की गड़बड़ी न हो।**

## परीक्षा नियन्त्रक का इस्तीफा

**सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय में सबकुछ ठीक नहीं चल रहा है मतलब। विश्वविद्यालय के प्रथम परीक्षा नियन्त्रक प्रोफेसर सुशील जोशी के इस्तीफे से विवि प्रबन्धन में खलबली मच गई। असल में कुलपति प्रो.नरेन्द्र भण्डारी के सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय की परीक्षा व्यवस्था को पटरी में लाने के लिये बेहद ईमानदार व्यक्ति प्रो. सुशील जोशी को यह जिम्मेदार दी थी। परीक्षा और परीक्षाफल सम्बन्धी लेटलतीफी तो आज तक बनी हुई है परन्तु इतना तो सभी जानते हैं कि परीक्षा जैसे बड़ी जिम्मेदारी को प्रो. जोशी बहुत ही मेहनत के साथ संचालित कर रहे थे और अपने स्तर पर अधिकांश मामलों को निस्तारित कर देते थे। ६ माह पूर्व विवि के विवि के प्रथम कुलपति प्रो. भण्डारी के इस्तीफे के समय ही यह लगने लगा कि शायद परीक्षा नियन्त्रक भी इस्तीफा दे सकते हैं लेकिन विषम परिस्थितियों में उन्होंने सबकुछ संभाले रखा। अब अचानक इस्तीफा दे डाला।**

**प्रो.जोशी के इस्तीफे के साथ ही कई सवाल कौंध रहे हैं। विवि में पद की लिप्सा बहुतों को हो सकती है और कई ऐसी ताक में भी रहते हैं। अब जबकि विवि के अल्मोड़ा और पिथौरागढ़ परिसर सहित बहुत सारे कार्य बढ़ते जा रहे हैं। नई शिक्षा नीति के दरवाजे भी खुल चुके हैं। ऐसे में परीक्षा व्यवस्था को पटरी पर लाने का जिम्मा फिर से चुनौती होगा।**

## बेशर्मी की हद हो गई.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

हल्द्वानी, दून पब्लिक स्कूल हल्द्वानी, केवीएम पब्लिक स्कूल हल्द्वानी, राईज एण्ड साइन पब्लिक स्कूल हल्द्वानी, सरस्वती ऐकडमी हल्द्वानी, दिल्ली पब्लिक स्कूल हल्द्वानी, विस्डम सीनियर सेकेंडरी स्कूल, एवीएम सीनियर सेकेंडरी स्कूल, पार्थ फाइंडर स्कूल, द हेस्टिंज स्कूल हल्द्वानी, लार्ड कृष्णा पब्लिक स्कूल हल्द्वानी, पीएसएन सीनियर सेकेंडरी स्कूल, बेंडी पब्लिक स्कूल हल्द्वानी, इमेरिल पब्लिक स्कूल हल्द्वानी, शैमफोर्ड स्कूल हल्द्वानी, इन्द्र एकेडमी हल्द्वानी, सरस्वती विद्यापीठ बिन्दुखत्ता, मदर मेरी जूनियर हाईस्कूल लालकुआ, ग्रीनवुड पब्लिक स्कूल लालकुआ, एसबी पब्लिक स्कूल लालकुआ, डीवीटो पब्लिक स्कूल हल्द्वानी, गुरुकुल इंटरनेशनल स्कूल हल्द्वानी हैं।

निजी स्कूलों की मनमानी पर अंकुश लगाने के लिये शिक्षा विभाग कितना कर पाता है यह अभी देखा जाना बांकी है। इस समय निर्देशानुसार टीमें बनाकर कार्रवाई की जा रही है। सीईओ के.एस. रावत ने बताया है कि विद्यार्थियों को महंगे दामों पर पुस्तकें बेचने और फीस वृद्धि करने पर 22 विद्यालयों को नोटिस जारी किया गया है। नोटिस का उचित जवाब नहीं देने पर विद्यालयों की मान्यता निरस्त करने के लिये उच्चाधिकारियों को पत्र भेजा जायेगा।

निजी स्कूलों की मनमानी के खिलाफ उत्तराखण्ड क्रान्ति दल ने महा निदेशक को ज्ञापन सौंपते हुए आन्दोलन शुरु कर दिया है। शिक्षा निदेशक को ज्ञापन देते हुए यूकेडी ने दस बिन्दु की मांग रखी हैं और सुनवाई न होने पर प्रदेश भर में आन्दोलन तेज करने की बात कही है। कहा है कि लूटखसोट करने वाले स्कूलों की मान्यता रद्द होनी चाहिये। खटीमा में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने भी निजी स्कूलों की मनमानी के खिलाफ आन्दोलन शुरु करते हुए आम जनता को न्याय देने की बात कही है। इतना सब होने पर भी आगे-आगे क्या होगा यही देखना शेष है

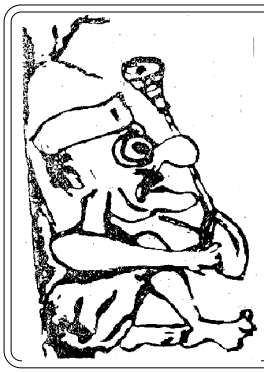

## फसक

# दाज्यू, यात्रा सीजन में च्वेड़ाच्वेड़ होने वाली ठैरी

## संस्कृति के रंग मतलब हालीबुड वालीवुड हो गया है बल

दाज्यू, कोरोना की लुक्का-छुप्पी के बीच यात्रा सीजन की सेहत दिखाई दे रही है। भीड़-भड़ाका, बहुत अरमान हैं दुनिया में भटकने वालों के। ओहो रे.....। अब सीजन है तो च्वेड़ाच्वेड़ होने ही वाली ठैरी। कहते रहो, ठण्डे की बोतल दस रुपये की कुरकुरे 5 रुपये के.....बेचने वाला चाहेगा उतने की बिकेगी। यात्रियों को उचेड़ कर रख देने वाले हुए। सरकार कह रही है किसी यात्री को परेशानी नहीं होनी चाहिये, टाली फ्री नम्बर भी जारी कर दिया है। कन्ट्रोल रूम भी स्थापित है। लेकिन सीजन में आ रहे उबाल को कौन रोक सकता है। किसको समय है पानी, बिस्कुट, होटल, किराये का रेट चैक करे। वह तो जब लट्ठबाजी हो, तभी कानून-व्यवस्था की बात होने वाली ठैरी।

अपना पनदा इस बार गैरसैंण में फल का ठेला लगा चुका है। कह रहा था- 'राजधानी जब बनेगी देखा जायेगा। इस सीजन में फल सजा लेता हूँ।' दाज्यू, च्वेड़ाच्वेड़ के इस कठिन समय में कुछ भी हो सकता है। हल्द्वानी में एक कारोबारी ने बैंक में बन्धक जमीन बेच डाली। मामला दर्ज कर जाँच हो रही है बल।

विधायकों को 3.37 करोड़ खर्च कर लैपटॉप दिये गये हैं बल। आरटीआई में टैपटॉप खरीद का खुलासा हुआ है। दाज्यू, लैपटॉप कुछ करना आए या न आए फिल्म देखने में सुविधा होने वाली हुई। सरकारी सम्पत्ति में बहुत कुछ कूड़ा-करकट पहले से होता रहा है। सरकार के प्रचार के लिये लाखों करोड़ों के पर्चे-पोस्टर भी कूड़े के भाव बंटने और बिक जाते हैं बल। विकास की धारा में बहुत गति होने वाली ठैरी। जो भी इसमें उतरता है तेज रफ्तार बहता चला जाता है बल।

अमित शाह जोर में हैं। केन्द्रीय गृहमंत्री शाह भ्रष्टाचारियों को उल्टा लटकाने की बात पहले ही कह चुके थे। इसके बाद उन्होंने कहा हमारी जमीन कोई सुई की नोक जितनी भी नहीं ले सकता। दाज्यू, गृह मंत्री की चिन्ता बड़ी होने वाली ठैरी। आम आदमी पार्टी राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा पाने के बाद खुश है जबकि राकांपा, भाकपा, तृणमूल का दर्जा छिन चुका है। चुनाव में अच्छे प्रदर्शन पर मिलता है बल दर्जा। प्रदर्शन अपने सीएम धामी का भी जोरशोर से है। उन्होंने कह दिया है- 'अवैध पाए जाने पर वन भूमि पर बनी मजारें तोड़ें।'

उधर जग्गा बौई रहा था बल। मार्च 2022 में पेरोल से फरारा हुए आतंकी जग्गा को एक साल बाद पुलिस ट्रांजिट रिमाण्ड पर सितारगंज जेल लाया गया। पन्तनगर के टैक्सी चालक की हत्या के मामले में इसकी पेशी हुई। जग्गा लम्बे समय से इस पेशी पर हाजिर नहीं हो हुआ था। अब सितारगंज जेल से पुलिस इसकी बौयाट देखेगी। खालिस्तान समर्थक भिंडरवाला से जुड़े अमृतपाल की खोज चल रही है, उसके करीबी साथी पकड़ में हैं।

दाज्यू, अपने हरदा भी गजब कर रहे हैं। अपने पैतृक गाँव मोहनरी से रामनगर लौट रहे पूर्व सीएम हरीश रावत ने अल्मोड़ा-रामनगर हाईवे पर मोहान के पास गड्डों को देख सड़क पर ही धरना शुरु कर दिया और इसका वीडियो सन्देश सीएम धामी को दिया। हमारी समझ नहीं आ रहा है कि आजकल गजब हो रहा है या गजबजाट। पक्ष-विपक्ष क्या कहें, विपक्ष तो फूं-फां करते ही कर थक चुका। राघव कह रहा है- 'देश में अब चुनाव नहीं होंगे क्योंकि मोदी ज्यू को बना दिया है। 2025 से पहले हिन्दू राष्ट्र बनने वाला है। 2024 तक थोड़ा साम्प्रदायिक धक्का-मुक्की उत्तर भारत में हो सकती है या चीन के साथ हल्का सा झौंक। मोदी ज्यू शिव, हनुमान का अवतार हैं।' दाज्यू, जब चारों ओर च्वेड़ाच्वेड़ हो रही है, क्या कहें? कहो तो बुरा लगता है, न कहो तो सांस अटकने लगती है। पगल्योट में कब लंगोट खुलकर चौराहे पर नाच हो पता नहीं। हम तो द्याप्ताटाइ (पूजा स्थल) पर जाकर मौन हो जाते हैं और अपने आप से सवाल करने लगते हैं। क्या करें इसके अलावा?

नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य सरकार पर गरज रहे हैं। वह कहते हैं- 'सरकार विपक्ष की आवाज दबा रही है।' दाज्यू, त्याड़ ज्यू के जमाने में खूब रंग में रहे हैं यशपाल दा भी। विपक्ष में जाकर भी रंग चटक रहा और अब नेता प्रतिपक्ष बनकर भी चटक ही हैं। रुद्रपुर के मनोज सरकार स्टेडियम के कराटे हॉल के चैंजिंग रूम में रखे कई क्विंटल राशन में घुन लग गया बल। दाज्यू, जाँच के बाद ही पता चला कि राशन में घुन लग चुका है.....। गदरपुर के एक गाँव में दो युवतियों के बारे में आपत्तिजनक पर्चे छापकर ग्राम में फेंके गये। तीन लोगों के खिलाफ मामला चल रहा है। दाज्यू, यात्रा सीजन के समय में पूर्व सीएम विजय बहुगुणा के सुपुत्र सौरभ भी धोखाधड़ी मामले में घिरे हैं।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

**पहले और अब**

# परिवार नियोजन एवं उसके भावी प्रभाव

**नन्दा बल्लभ पाण्डे**

पहले समय में हमारे दशे में आदर्श संयुक्त परिवार का वातावरण होता था, परिवार में दादा-दी, माता-पिता, चाचा चाची, ताऊ-ताई व बुआ आदि सहित भरापूरा परिवार हुआ करता था। परिवार में आपसी मेलजोल, प्रेमभाव व सहयोग बना रहता था। परिवार में सारे काम, खेती बागवानी, पशुपालन एवं कुटीर उद्योग आदि में मिलजुल कर हाथ बटाते थे। परिवार की बहुएं आपसी प्रेमभाव से एक-दूसरे का हाथ बटाती थीं। बालक सयाने होने पर अपनी आजीविका, रोजगार या उच्चशिक्षा के लिये परदेश भी जाते थे तो समय-समय पर अपने घरों में परिवार से मेल-मुलाकात करने या विवाहित युवयुवक अपने बच्चों को अपने माता-पिता के संरक्षण में छोड़ जाते थे। समय-समय पर तीज-त्यौहारों व अन्य अवसरों पर अपने घर-गाँव आया करते थे। विशेषकर फौज में भर्ती नौजवान साल भर में बीच-बीच में अपने परिवार से मिलने आया-जाया करते थे। परिवार और आस-पड़ौस वालों को भी इनका इन्तजार रहता था। अब समय बदल गया है और परदेश में गये नौकरी-पेशा लोग अपने परिवार बच्चों को अपने साथ ले जाने लगे तथा घर की देखरेख अपने बुजुर्ग माता-पिता के ऊपर छोड़ देते हैं। पहले से तीज-त्यौहार पर घर आने का सिलसिला बना रहता था अब वह भी कम होता जा रहा है। इससे भरेपूर गाँव वीरान होते जा रहे हैं। इसके अलावा परिवार नियोजन भी एक बड़ा कारण हो चुका। लोग अपने परिवार को सीमित करते जा रहे हैं, ऐसे में दो बच्चे तक के परिवार सिमटने की परम्परा हो रही है और संयुक्त परिवार का लाड़प्यार टूट रहा है। एकल परिवार होने से चाचा ताऊ, बुआ-मौसी जैसे रिश्ते भूलते जा रहे हैं। आने वाले समय में यह स्थिति बहुत ही भयावह होगी। परिवार तो होंगे लेकिन संयुक्त परिवार का सा लाड़प्यार व रिश्ते नहीं रहेंगे। तीज-त्यौहारों का तरीका भी बदल ही जायेगा।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

जानकारी

# हरित क्रान्ति के बाद पहाड़ का लाल चावल विलुप्ति के कगार पर

**डॉ.हरीश चन्द्र अन्डोला**

प्राचीन ग्रन्थ चरक संहिता में भी लाल चावल का उल्लेख पाया जाता है, जिसमें लाल चावल को रोग प्रतिरोधक के साथ-साथ पौष्टिक बताया गया है। पौष्टिक तथा औषधीय गुणों से भरपूर होने के साथ-साथ लाल चावल में विपरीत वातावरण में भी उत्पादन देने कि क्षमता होती है। यह कमजोर मिटटी, कम या ज्यादा पानी तथा पहाड़ी ढालूदार आसिंचित खेतों में भी उत्पादित किया जा सकता है। पौष्टिकता से भरपूर पहाड़ का लाल चावल अब अतीत का हिस्सा बनता जा रहा है। कभी लाल चावल की दर्जनों किस्में पहाड़ पर लहलहाती थी अब चार-पाँच किस्में ही दिखाई देती हैं। इसका भी काफी कम मात्र में उत्पादन किया जा रहा है। पर्वतीय भू-भाग में लाल चावल की कई किस्में बोई जाती थीं। हरित क्रान्ति के बाद यह किस्में बड़ी तेजी से खत्म हो गई। इसकी जगह मैदानी क्षेत्रों में बोई जाने वाली धान की किस्में आने लगी। आज पहाड़ के 80 फीसद भू-भाग में यही दिखाई देती हैं। एटकिसंन के गजेटियर में लाल चावल की 48 किस्मों का जिक्र है। जबकि कुछ जगहों पर 120 किस्में भी बताई गई हैं। पारम्परिक लाल चावलों का महत्व केवल खाद्य जरूरतों के लिए नहीं होता था, बल्कि पूजा पाठ में भी इनका विशेष महत्व होता था। पिथौरागढ़ में बोये इस धान से पार्थिव, चूड़े बनते थे। चनौदा के सेला से पार्थिव पूजा होती थी। लोहाघाट का कत्यूर तो बासमती को टक्कर देता था। गंगोलीहाट का लाल चमयाड़, नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़ का थापचिनी भी खूब स्वाद देता तो गरुड़-बागेश्वर व बलुवाकोट में चाइना फोर, गंगोली का खजिया व लोहाघाट का बडपासो भून कर चबाने के काम आता रहा है। लाल चावल की खासियत यह है कि इसे कम पानी में उगाया जा सकता है जबकि मैदानी क्षेत्र के चावल के पैदावार को ज्यादा पानी की जरुरत होती है। यह पूजा (अक्षत तथा पार्थिव) के काम आता है। इसका आटा पार्थिव पूजा के अलावा पकवान (साया व सिगल) बनाने के काम आता है। जमाल- यह भी साल की तरह पकवान बनाने तथा विशेष रूप से च्यूड़ा व सिरौला बनाने के काम आता है। खजिया- यह धान विशेषत: बेरीनाग-गंगोली व आस-पास के क्षेत्र में ही होता है। यह सिंचित धान है। इसका भात नहीं बनता बल्कि धान के मुरमुरे चावल बनते हैं, जो अखरोट या भट के भुने दानों के साथ चबाकर खाने के काम आते हैं। खीर बनाने में यह विशेष रुप से प्रयुक्त किया जाता है। कत्यूर यह लोहाघाट में पनगल में बोया जाने वाला प्रसिद्ध धान है। स्वादिष्ट और मीठा. बाल निकलते समय पौधों से खुशबू आती है। पूर्व में विवाह के समय बासमती के स्थान पर इसे ही बनाया जाता था।

बड़पासो- यह लोहाघाट तथा गंगोली में होने वाला लाल रंग का धान है। इसके खाजे (धान को भूनकर ओखल में कूट कर बनाए गए चपटे चावल, जो चबाकर खाए जाते हैं) स्वादिष्ट होते हैं। इसका भात विशेष स्वादिष्ट नहीं होता। चम्पाड़- गंगोलीहाट में पाताल भुवनेश्वर क्षेत्र में होने वाले लाल चावल का यह धान उपराऊँ में होता है। इसका भात स्वादिष्ट होता है। थापचीनी- कुमाऊँ क्षेत्र की सिंचित धान की यह अत्यधिक प्रचलित किस्म है। कहीं-कहीं इसे असिंचित भी बोया जाता है। पौष्टिकता से भरपूर लाल चावल में प्रोटीन 7.0 ग्राम, 100 ग्राम फाइबर 2 ग्राम, 100 ग्राम, लौह 5.5 मिग्रा, 100 ग्राम तथा जिंक 3.3 मिग्रा,100 ग्राम तक पाए जाते है। यह चावल डाइबिटीज का मरीज भी खा सकता हैं। लाल चावल की प्रजाति कुछ जगहों पर होती है। लेकिन वह भी काफी कम मात्रा में। इसको बढ़ावा देने के प्रयास किए जा रहे हैं। लाल चावल में सबसे महत्वपूर्ण राइस ब्रान ही है जो पोष्टिक एवं औषधीय गुणों से भरपूर होता है। जहाँ तक लाल चावल तथा सफेद चावल को पौष्टिकता की दृष्टि से तुलनात्मक विश्लेषण किया जाय तो सफेद चावल में प्रोटीन 6.8 ग्राम 100 ग्राम, लौह 1.2 मिग्रा 100 ग्राम, जिंक 0. 5 मिग्रा 100ग्राम, फाईवर 0.6 ग्राम 100 ग्राम, जबकि लाल चावल में प्रोटीन 7. 0 ग्राम 100 ग्राम फाइबर 2 ग्राम 100 ग्राम, लौह 5.5 मिग्रा 100 ग्राम तथा जिंक 3.3 मिग्रा 100 ग्राम तक पाए जाते हैं। प्राचीन ग्रन्थ चरक संहिता में भी लाल चावल का उल्लेख पाया जाता है जिसमें लाल चावल को रोग प्रतिरोधक के साथ-साथ पौष्टिक बताया गया है। पौष्टिक तथा औषधीय गुणों से भरपूर होने के साथ-साथ लाल चावल में विपरीत वातावरण में भी उत्पादन देने कि क्षमता होती है। यह कमजोर मिटटी, कम या ज्यादा पानी तथा पहाड़ी ढालूदार आसिंचित खेतो में भी उत्पादित किया जा सकता है। लाल चावल में मौजूद गुणों के कारण ही वर्तमान में भी उच्च गुणवत्ता युक्त प्रजातियां के विकास के लिए के लिए लाल चावल का प्रयोग किया जाता है। विश्वभर में हुए कुछ ही अध्ययनों में लाल चावल का वैज्ञानिक विश्लेषण होने के प्रमाण मिले है जबकि लाल चावल के निवारण के लिए अच्छी क्षमता रखता है। सर्वप्रथम सबसे प्राचीन लाल चावल जापान में लगभग 300 काल में एक प्रमुख जापानी डिश, जो विशेष अवसरों पर बनाई जाती थी, में होने के प्रमाण मिले है। जापानी सरकार द्वारा वर्ष 2007 में के सौजन्य से सूक्ष्म एवं लघु उद्योगों के सहयोग हेतु प्राचीन लाल चावल का एक परियोजना में विस्तृत अध्ययन किया गया। उपरोक्त अध्ययन के दौरान लाल चावल में मौजूद गुण पाये जाते है और इसी वजह से लाल चावल तथा विभिन्न स्वास्थ्य उत्पादों के लिए प्रयुक्त होता है जो कि में लाभदायक पाये जाते है। लाल चावल जैसे पेट में वसा का जमाव सेएआज विश्वभर में सफेद चावल की धूम मची हुई है जबकि स्वास्थ्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण लाल चावल को इतना महत्व नहीं मिला है। वर्तमान में भी भारत में स्थानीय बाजार में लाल चावल 50 रूपये किग्रा. तथा अप्तरराष्ट्रीय बाजार में जैविक लाल चावल 250 किग्रा0 तक बेचा जाता है। यदि उत्तराखण्ड के सिंचित तथा असिंचित दशा में मोटे धान की जगह पर यदि लाल चावल को व्यवसायिक रूप से उत्पादित किया जाय तो यह राज्य में बेहतर अर्थिकी का स्रोत बन सकता है। जो पर्यावरण के सन्तुलन, जल और वायु की शुद्धता, भूमि के प्राकृतिक रूप को बनाये रखने में सहयोगी, जलधारण क्षमता बनाये रखने में सक्षम थीं उत्तराखण्ड के परिप्रेक्ष्य में इतनी पोष्टिक एवं औद्योगिक रूप से महत्वपूर्ण फसल जिसका अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अधिक मांग हैए को प्रदेश में व्यवसायिक रूप से उत्पादित कर जीवका उपार्जन का साधन बनाया जा सकता है। पहाड़ के जैविक धान हो दलहन या अन्य फसलें देश ही नहीं विदेशों में भी अच्छी मांग है। मगर समर्थन मूल्य तय न होने और विपणन का बेहतर बन्दोबस्त के अभाव में पहाड़ के काश्तकारों को लागत वसूलना तक दूभर हो जाता है। तर्क दिया है कि यदि राज्य सरकार पहल करे तो पिछड़े व सीमावर्ती जिलों के किसानों को बड़ा लाभ हो सकता है। उन्होंने पीएम की अधयक्षता में कैबिनेट के धान का न्यूनतम समर्थन मूल्य एक हजार रुपए तय किए जाने को सराहनीय बताते हुए उत्तराखण्ड के पर्वतीय जिलों के लिए भी ठोस कदम उठाए जाने पर जोर दिया है। ताकि पर्वतीय किसानों को औने पौने दाम पर अपनी उपज को बिचौलियों के हाथ बेचने को विवश न होना पड़े। इस बीच पहाड़ी जिलों में भी धान की खरीद शुरू किए जाने बल दिया है। पत्र के जरिये यह भी अवगत कराया है कि बागेश्वर, चमोली, रुद्रप्रयाग, पुरोला का लाल चावल राष्ट्रीय बाजार में 250 रुपये किलो तक बिक रहा है। मगर धान उत्पादक किसान को वाजिब दाम नसीब नहीं होता। पूर्व दर्जा राज्य मंत्री ने सीएम को पत्र लिख उत्तराखण्ड के सभी पहाड़ी जिलों में जैविक विधि से उगाए जाने वाले धान व अन्य स्थानीय फसलों के लिए भी समर्थन मूल्य की घोषणा करने का आग्रह किया है ताकि पर्वतीय किसानों को प्रोत्साहित कर ऊसर होती खेती को बचाया जा सके। मगर धान उत्पादक किसान को वाजिब दाम नसीब नहीं होता। पौष्टिकता से भरपूर पहाड़ का लाल चावल अब अतीत का हिस्सा बनता जा रहा है।

## ज्योतिष की बातें - 123

इस सप्ताह चन्द्रमा के अतिरिक्त अन्य किसी भी ग्रह का राशि परिवर्तन नहीं हो रहा है। 24 अप्रैल 2023 को बुध मेष राशि में बीस दिनों के लिये अस्त हो जाएगा। कहा जाता है कि बुध के अस्त होने का उसके शुभाशुभ प्रभाव में कोई विशेष परिवर्तन नहीं होता है।

इसके पूर्व 20 अप्रैल 2023 को सूर्य सायन मान से वृषभ राशि में प्रवेश कर चुका है। ग्रीष्म ऋतु का प्रारम्भ हो गया है। जो लोग नियमित रूप से त्रिफला का सेवन करते हैं वे यदि थोड़ा गुड़ मिलाकर त्रिफला का सेवन करेंगे तो अधिक स्वास्थ्यप्रद रहेगा।

शंकराचार्य जयन्ती- वैशाख शुक्ल पंचमी उदयव्यापिनी तिथि, तदनुसार मंगलवार 25 अप्रैल को शंकराचार्य जयन्ती मनाई जाएगी। इस दिन आद्य जगद्गुरु शंकराचार्य जी के किसी ग्रन्थ का पाठ करना चाहिए।

गंगा सप्तमी- वैशाख शुक्ल सप्तमी मधयाह्न व्यापिनी तिथि में गुरुवार 27 अप्रैल को गंगा सप्तमी का पर्व मनाया जाएगा। इस दिन श्रद्धापूर्वक गंगास्नान एवं गंगापूजन करना चाहिए।

जानकी नवमी- वैशाख शुक्ल नवमी मध्याह्न व्यापिनी तिथि में शनिवार 29 अप्रैल को जानकी नवमी का पर्व मनाया जाएगा। इस दिन विधि-विधान पूर्वक सीता माता का षोडशोपचार पूजन कर जानकीस्तोत्रम् आदि का पाठ करना चाहिए। शुभं भवतु !!

**-ओंकार नाथ कोष्टा**
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद

## सम्यक विचार- 14

### चुनाव तन्त्र अर्थात लालच त्रन्त्र

किसी भी पार्टी को राज्य अथवा केन्द्र में सत्ता में आने के बाद उसको अगला चुनाव जीतने की चिन्ता सताने लगती है। अत: अगले 5 वर्ष तक निरन्तर समाज के किसी विशेष वर्ग को सन्तुष्ट करने का प्रयास होता है। बहुमत की चुनाव पद्धति में वोट का मूल्य सभी का बराबर होता है, चाहे राष्ट्रपति हो या सामान्य नागरिक, गरीब हो या अमीर, शिक्षित हो या अशिक्षित, विद्वान हो या मूर्ख। सभी के वोट का महत्व एक समान होता है। कुछ राजनीतिक पार्टियाँ जाति विशेष को अपने पक्ष में करना चाहती हैं, कुछ सम्प्रदाय विशेष के मतदाताओं को अपने पक्ष में करना चाहती हैं तो कुछ गरीब लोगों को अपने पक्ष में करना चाहती हैं। कुछ राजनीतिक पार्टियों का निर्माण भी जातीय आधार पर, सम्प्रदाय आधार पर अथवा गरीबी के आधार पर हुआ है। इसलिए सत्ता में आने पर ये पार्टियाँ एक वर्ग विशेष को लाभ पहुँचाने के लिए नियम आदि बनाती हैं। इन नियमों से अधिकांश स्थितियों में दूसरे वर्ग को कष्ट होता है। उदाहरण के लिए किसी विभाग में अधिकारियों से अधिक कर्मचारियों की संख्या होती है तो सत्तापक्ष कर्मचारियों के पक्ष में निर्णय करते हैं जिस कारण अधिकारियों को असुविधा होती है।

चुनाव प्रचार में प्राय: पार्टियाँ यह घोषणा करती हैं कि मेरी सरकार आने पर इस सरकार की निर्णयों को पलट देंगे। वर्ग विशेष को लाभ पहुँचाने के लिए किए गए अधिकतर निर्णय समाज को विखण्डित करने वाले, देश को कमजोर करने वाले होते हैं। लगभग तीस वर्ष पहले बेरोजगारी भत्ते से प्रारम्भ होकर लालच अब लैपटॉप और स्कूटी देने तक पहुँच गया है।

अब इस बात की आवश्यकता हो गई है कि देश में कोई स्थाई शक्ति होनी चाहिये जो सत्तापक्ष द्वारा किए गए देश विघातक और समाज में विद्वेष पैदा करने वाले निर्णयों को लागू करने से रोक सके। अथवा नीतिगत निर्णय और महत्वपूर्ण दूरगामी निर्णय तीन चौथाई बहुमत से ही लागू होना चाहिए।

**-सरल**

## सिकल सेल एनीमिया की जाँच

रुद्रपुर। थैलोसीमिया, हीमोफीलिया के बाद प्रदेश में पहली बार लाइलाज जन्मजात बीमारी सिकल सेल एनीमिया का पता लगाने के लिये स्वास्थ्य विभाग जाँच करेगा।

देश में हुए अध्ययनों में अब तक यह आनुवांशिक बीमारी जनजाति समुदाय के लोगों में अधिक पाई गई है। जिस कारण राज्य के जनजातीय बहुल जिले उधमसिंह नगर में सिकल सेल एनीमिया की स्क्रीनिंग पर सबसे अधिक ध्यान दिया जा रहा है। स्वास्थ्य विभाग ने समाज कल्याण विभाग से जिले में निवास कर रहे जनजाति समुदाय के लोगों की संख्या आंकड़े मांगे हैं। बताया गया है कि खटीमा, नानकमत्ता, सितारगंज व गूलरभोज में थारु-बुक्सा जनजाति की बड़ी संख्या है।

## जीने का अर्थ

पथिक तेरे पथ पर कई नजारे आयेंगे
फूल और शूल दोनों राहों पर बिछ जायेंगे
तू फूल चुनता है या शूल!
तुझे यह खुद तय करना होगा
ऐश्वर्य भरा भीवन या
तूफानों से लड़ना होगा।
अकेला चलना है कोई साथ न निभायेगा
तेरा चुनाव ही तुझे जीने का
सही अर्थ सिखायेगा।

**-रेनू कपूर**

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

# खड़िया खनन का खामियाजा भुगत रहा है काण्डा

**महाकाली मन्दिर में धंसाव के बाद मचा हल्ला और दिये गये हैं जाँच के निर्देश**

बागेश्वर/काण्डा। खड़िया खनन के वैध अवैध कारोबार का असर तो एक दिन होना ही है। ऐसा काण्डा क्षेत्र में होने जा रहा है। अपने मुनाफे के लिये बेतरतीब खड़िया खनन करने और कराने वालों जितना अत्याचार काण्डा, रीमा, पचार क्षेत्र में किया है उसे क्षेत्रवासियों को भुगतना पड़ रहा है।

काण्डा के प्रसिद्ध महाकाली मन्दिर भी खड़िया खनन के इस खेल में भू धंसाव की जद में है। हालात यह हैं कि मन्दिर परिसर के अलावा गैस गोदाम और आसपास के घरों में भी दरारें आ रही हैं। महाकाली का यह प्रसिद्ध मन्दिर श्रद्धालुओं की आस्था का केन्द्र है। कहते है। आदिगुरु शंकराचार्य ने मन्दिर में महाकाली की मूर्ति स्थापित की थी। वर्तमान हालातों में यह मूर्ति दो इंच खिकस चुकी है। मन्दिर के बेस में भी दरार आई है। जिससे मन्दिर एक ओर को झुक चुका है। खनन के कारण ही यह सब हुआ है, ऐसा क्षेत्रवासी कहते हैं। भूधंसाव का हल्ला मचते ही जिलाधिकारी अनराधा पाल ने मन्दिर के पास खड़िया खनन से मन्दिर परिसर को हो रहे नुकसान को देखा। डीएम के दौरे के समय मन्दिर समिति और क्षेत्रवासियों ने उन्हें बताया कि खनन के कारण ही मन्दिर को लगातार खतना उत्पन्न हो है। उन्होंने मांग की कि मन्दिर के पास खनन पर तत्काल रोक लगनी चाहिये।

जिलाधिकारी अनुराधा पाल ने उप जिलाधिकारी को को खान में भारी मशीन का प्रयोग तत्काल बन्द करने और भू धंसाव की उच्चस्तरीय जाँच करने के निर्देश दिए हैं। डीएम के निरीक्षण के दौरान मन्दिर समिति के के रघुवीर सिंह माजिला, अर्जुन माजिला, दीवान सिंह, विजय कार्की, नरेन्द्र डसीला सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

# भू-माफिया भगाओ पहाड़ बचाओ आन्दोलन

**आपराधिक गतिविधियों पर तुरन्त प्रभावी रोक लगाने की मांग को लेकर अल्मोड़ा में बैठक**

अल्मोड़ा। भू माफिया भगाओ पहाड़ बचाओ को लेकर नगर पालिका सभागार में खुली बैठक हुई। बैठक में प्रदेश सरकार पर भू माफियाओं की आपराधिक गतिविधियों पर तुरन्त प्रभावी रोक लगाने की मांग की गई। साथ ही चेतावनी दी गई कि यदि सरकार ने उत्तराखण्ड की जमीनों व प्राकृतिक संसाधनों पर बाहरी पूंजीपतियों, माफियाओं के कब्जे करने पर लगाम नहीं लगाई तो उत्तराखण्ड की जनता को आर पार की लड़ाई लड़ने को मजबूर होना होगा।

उत्तराखण्ड परिवर्तन पार्टी, सालम समिति, भूमि बचाओ संघर्ष समिति फलसीमा एवं उत्तराखण्ड छात्र संगठन की ओर से आयोजित बैठक में उपपा के केन्द्रीय अध्यक्ष पी.सी.तिवारी ने कहा कि भू माफियाओं को सरकार और राजनीतिक दलों का प्रत्यक्ष और परोक्ष समर्थन और कथित जनप्रतिनिधियों की रहस्यमयी चुप्पी के कारण उत्तराखण्ड गम्भीर संकट में फंस गया है। इससे मुक्ति के लिये सरकार व समाज को कठोर निर्णय लेने की जरूरत है।

सालम समिति के अध्यक्ष राजेन्द्र रावत ने कहा सौर ऊर्जा के नाम पर बाहर की तमाम कम्पनियां भोलेभाले ग्रामीणों को बहला कर साम दाम दण्ड भेद और दबंगाई से बड़े पैमाने पर जमीनें हथिया रही हैं। बैठक में फलसीमा, चितई, सालम व तमाम गाँवों व प्रदेश में भूमाफियाओं पर चिन्ता व्यक्त करते हुए सरकार से राज्य में भूमि बन्दोबस्त करने, सरकार की अनुमति का दुरुपयोग कर बड़े-बड़े निर्माण करने वाली संस्थाओं की सम्पत्तियों को जब्त करने की मांग की गई।

बैठक में रीता दुर्गापाल, उदय किरौला, कौस्तुभ आनन्द, बलवन्त सिंह, मोहन सिंह, एड. नारायण राम मौजूद थे।

# थल का व्यापारिक मेला और पालीपछाऊ का ऐतिहासिक बिखोती मेला अपने रंग में

**परिक्रमा**

थल/द्वाराहाट। मेलों के इस प्रदेश में इस बीच दो बड़े बड़े पौराणिक मेलों का रंग जमा। हालांकि मेलों में पुरानी सी बात नहीं है लेकिन इन मेलों का स्वरूप ही ऐसा है कि परम्परागत रूप से लोग जुड़े रहते हैं।

बैशाखी के पर्व पर लगने वाल थल का मेला कलश यात्रा के साथ आरम्भ हुआ। ठुल म्याल के नाम से भी इसे जाना जाता है। विधायक डीडीहाट विशन सिंह चुफाल ने मेले का उद्घाटन करते हुए निधि से ढाई लाख रुपये देने की घोषणा की। स्थानीय स्कूलों के सहयोग से निकाले गये सांस्कृतिक जुलूस का शुभारम्भ प्राचीन बालेश्वर मन्दिर से हुआ जो पुराने बाजार से होते हुए रामलीला मैदान पहुँचा। मेले में आने वाले व्यापारियों ने लघु-कुटीर उद्योगों में उत्पादित सामान की बिक्री की। मेला कमेटी के अध्यक्ष दिनेश चन्द्र पाठक, बबलू सामन्त, जगदीश पाठक, मदन उपाध्याय, गंगा सिंह मेहता, सन्तोष वर्मा, प्रवीण जंगपांगी, कमल कन्याल, राम सिंह जंगपांगी, कौस्तुबानन्द जोशी सहित तमाम लोग सहयोगी भूमिका में थे।

पाली पछाऊ का ऐतिहासिक, पौराणिक स्याल्दे बिखोती मेले का उद्घाटन विधायक मदन सिंह बिष्ट ने किया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ आरम्भ हुए मेले में विभिन्न गाँवों से लोग ढोल नगाड़े निशानों के साथ झोड़ा-चांचरी गाते हुए पहुँचे। आल, नौज्यूला, गरख दलों ने निर्धारित स्थान पर झोड़ा किये। द्वाराहाट नगर में बट पुजै मेला भी हुआ। जिसका उद्घाटन डीएम वन्दना ने किया। यहाँ ओड़ा भेटने की रस्म के अलावा सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। मेले में ललित पुजारी, मेला कमेटी के हेम रावत, ब्लाक प्रमुख दीपक किरौला, ज्येष्ठ प्रमुख नन्दिता भट्ट सहित तमाम लोग उपस्थित थे।

# सावधान! कोरोना से संक्रमितों की संख्या बढ़ी

**देश-प्रदेश में कोरोना के मामलों को देखते हुए सीमा क्षेत्र में स्वास्थ्य विभाग की जाँच शुरु**

देश-प्रदेश में कोरोना से संक्रमितों की संख्या बढ़ती जा रही है, ऐसे में सभी को सावधान रहने की जरूरत है। देखने में आ रहा है कि यात्रा सीजन व भीड़ भाड़ के इन दिनों में लोग लापरवाही कर रहे हैं। बार-बार सूचना के बावजूद भीड़भरे आयोजनों में बिना मास्क के धूम मची है। कोरोना के बीते हुए समय को याद कर सतर्क रहने की जरूरत है।

उत्तराखण्ड में कोरोना संक्रमि मामले लगातार बढ़ रहे हैं। आईटीबीपी जवान, डाक्टर, शिक्षक सहित 150 लोग संक्रमित हो चुके हैं। एक संक्रमित की मौत के बाद प्रशासन अलर्ट है। नैनीताल जिले में ही एक्टीव केस 80 हो चुके हैं। देहरादून जिले में यह संख्या 60 के करीब है। अल्मोड़ा में भी दर्जन भर से अधिक मामले दर्ज हुए हैं।

कोरोना की लहर न बढ़े इसके लिये प्रार्थना जरूरी है। साथ ही तैयारी भी की जा रही है। प्रशासन ने चिकित्सा विभाग के साथ मिलकर मॉकड्रिल भी किया है। सीमान्त क्षेत्र धारचूला और झूलाघाट के पुलों में स्वास्थ्य विभाग के निर्देशों पर जाँच की जा रही है। इन अन्तर्राष्ट्रीय पुलों पर आवागमन से पिछली बार भी कई मामले पकड़े गये थे और नेपाल के यात्रियों को सुविधा दी गई थी। इसी प्रकार बनबसा से नेपाल सीमा पर भी जाँच की जा रही है। इसके अलावा पूर्णागिरी मेले पर आने वाले यात्रियों को जगबूढ़ा पुल पर जाँच के लिये कहा गया है। इन दिनों ग्रीष्मकालीन पर्यटन व यात्रा सीजन से काफी भीड़भाड़ उत्तराखण्ड के पहाड़ों की ओर आ रही है। ऐसे में यात्रा सीजन पर कारोबारियों को भी सावधानी बरतनी होगी। कोरोना संक्रमण न फैले इसके लिये पहले से सख्ती जरूरी है अन्यथा दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है।

# जागेश्वर के झाकरसैम में तैयार हो रहा है चाय बगान

**टी बोर्ड की तैयारी। इसके लिए उद्यान विभाग ने भूमि हस्तान्तरित कर दी है**

दन्या/बाड़ेछीना। जागेश्वर धाम से लगे झाकरसैम में उत्तराखण्ड टी बोर्ड चाय बागान तैयार कर रहा है। इसके लिये उद्यान विभाग ने टी बोर्ड को 19 हेक्टेयर भूमि हस्तान्तरित कर दी है। इसके बाद यहाँ बागान और धौलादेवी में चाय फैक्ट्री खोली जायेगी।

चाय बागान और फैक्ट्री स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण होगी और पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र भी होगा। बताया जा रहा है कि टी बोर्ड यहाँ टी टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिये चाय बागान स्थापित करने जा रहा है। चाय बागान के अस्तित्व में आने के बाद पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा।

टी बोर्ड ने दो हेक्टेयर भूमि में प्लान्टेशन का कार्य पूरा भी कर लिया है। जबकि शेष भूमि में प्लान्टेशन के लिये वर्ष 2024 तक का लक्ष्य रखा गया है। वर्तमान में यहाँ 40 से अधिक स्थानीय लोगों को रोजगार मिला हुआ है। जिसमें तीस महिलाएं भी हैं। बागान के अस्तित्व में आने के बाद यहाँ चाय का उत्पादन होगा और स्थानीय लोगों को और रोजगार मिलेगा।

जिले में स्थापित बागानों के उत्पादित चाय को अब तक प्रोसेसिंग के लिये कौसानी भेजा स्थित यूनिट में भेजा जाता था। धौलादेवी में फैक्ट्री के प्रस्ताव के बाद इसमें और सुविधा मिल सकेगी। फैक्ट्री स्थापित होने के बाद स्थानीय स्तर पर चाय का उत्पादन होगा। टी बोर्ड के अधिकारी अनिल खोलिया ने बताया है कि भूमि हस्तान्तरित होने के बाद यहाँ प्लान्टेशन का कार्य शुरू कर दिया गया है। जिससे रोजगार सृजन की शुरुआत हो चुकी है।

यह भी बताते चलें कि झांकरसैम श्रद्धालुओं की आस्था का केन्द्र और पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। जागेश्वर विधानसभा में जागेश्वर, वृद्ध जागेश्वर, झांकरसैम में पुराने समय से मान्यता रही है। चाय बागान विकसित होने के बाद नई सम्भावनाएं दिखाई दे रही हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

## स्वतंत्रता सेनानी स्व. विश्वकर्मा का स्मरण

मुनस्यारी। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. नर राम विश्वकर्मा की पुण्यतिथि कृषि एवं बागवानी दिवस के रूप में मनायी गई। इस अवसर पर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी को श्रद्धांजलि अर्पित करने लोग जुटे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ. दुर्गा प्रसाद ने कहा कि देश को आजादी दिलाने में विश्वकर्मा जी ने अपना सर्वस्व न्यौछावर किया। आज शिल्पी समाज को उन पर गर्व है। शिल्पी संगठन के अध्यक्ष दीवान राम वर्मा ने नर राम विश्वकर्मा की जीवनी पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर कालू राम, सुन्दर राम जोहारी, नैन राम, तारा देवी, थालेश्वरी, मोहनी देवी आदि उपस्थित थे।

## भयूं का जंगल गोरखनाथ को सौंपा

कपकोट। भयूं गाँव के जंगल को बचाने के लिये ग्रामीणों ने इसे गोरखनाथ को सौंप दिया है। सरपंच कार्यकाल समाप्त होने से जंगल में बांज का अवैध कटान हो रहा था। ग्रामवासियों ने बांज के जंगल को बचाने के लिये जंगल को गुंसाई गोरखनाथ को सौंपने का निर्णय लिया। साथ ही 5 साल तक जंगल से चारापत्ती और लकड़ी न काटने की शपथ ली।

## बिना पंजीयन होम स्टे पर कार्रवाई करें

भीमताल। जिला पंचायत सदस्य अनिल चनौतिया, भाजपा नेता दिनेश सांगुड़ी ने क्षेत्र में बाहरी लोगों की ओर से बिना पंजीयन के होम स्टे का संचालन करने का आरोप लगाते हुए विधायक राम सिंह कैड़ा से शिकायत की। इस पर विधायक ने पर्यटन अधिकारी बृजेन्द्र पाण्डेय से बिना अनुमति के संचालित बाहरी लोगों के होम स्टे पर कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं।

## पैराग्लाइडिंग का रोमांच

बागेश्वर। कपकोट में राष्ट्रीय एक्यूरेसी पैराग्लाइडिंग प्रतियोगिता होने से इसका रोमांच देखने को मिला। 31 पायलटों ने जालेख की पहाड़ी से उड़ान भरते हुए केदारेश्वर मैदान में सुरक्षित लैंडिंग की। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य साहसिक खेलों को प्रोत्साहित करना था। प्रतियोगिता की शुरुआत में दो पायलट भटके भी थे।

## जीपीएस डिवाइस से छूट

ऋषिकेश। चारधाम यात्रा के लिए वाहनों को ग्रीन कार्ड बनवाने में जीपीएस डिवाइस की अनिवार्यता में 31 मई तक छूट दी गई है। तक तक व्हीकल लोकेशन ट्रैकिंग डिवाइस नहीं लगवाई हो तो इसके बाद बनने वाले ट्रिप निरस्त कर दिए जाएंगे। इसलिये ग्रीन कार्ड तो बनवाने ही होंगे। फिलहाल 31 मई तक इसमें छूट है।

### तराई की राजनीति

# मौका देखते बदलते रहे बेहड़

रुद्रपुर। तराई की राजनीति में इन दिनों पूर्व मंत्री व किच्छा विधायक तिलकराज बेहड़ की चर्चा बहुत है। हमेशा मौके की तलाश में रहने वाले बेहड़ उत्तराखण्ड राज्य के विरोधी रहे हैं लेकिन राज्य बनने के बाद इन्होंने अपना पैंतरा बदला। भाजपा, कांग्रेस दोनों पार्टी का स्वाद लेने वाले तिलकराज की राजनीति भाजपा लहर में चमकी थी जब बलराज पासी नैनीताल-बहेड़ी लोक सभा सीट पर सांसद और बेहड़ हल्द्वानी विधानसभा सीट पर विजयी हुए। वोटों के गणित में पंजाबी वोटों का गणित इनके साथ गिना गया। उत्तराखण्ड राज्य की अवधारणा पर सवाल करने पर यह कुछ उत्तर दे देते परन्तु राज्य के पक्षधर नहीं रहे। रुद्रपुर में दबदबा बनाते हुए यह फिर से विधायक बने। राजकुमार ठुकराल की राजनीति में मजबूती देख बेहड़ को पैर पीछे खींचने पड़े और यह कांग्रेसी बन गये। स्वास्थ्य मंत्री रहते हुए बहुत अनुभव भी इन्हें हुए हैं। रुद्रपुर का चुनावी गणित देखते हुए विधानसभा चुनाव में इन्होंने किच्छा सीट से टिकट चाहा और विधायक बन गये। किच्छा सीट पर राजेश शुक्ला से लोगों की नाराजी और बेहड़ का प्रवेश बदलाव कर गया। जबकि रुद्रपुर सीट पर राजकुमार ठुकराल का जिद्दीपन उनके टिकट कटने का कारण बना और भाजपा टिकट पर शिव अरोरा विधायक बन गये। शिव अरोरा जिस प्रकार से बड़े-छोड़े नेताओं से चिपट पर अपनी राजनीति को बढ़ा रहे हैं वह भविष्य के नेता तो हैं ही। जिन्होंने दबंग ठुकराल और अनुभवी बेहड़ से ज्यादा पकड़ वर्तमान में बनाई है।

विधानसभा चुनाव में कांग्रेस कमजोर ही रही है लेकिन बेहड़ का विधायक बनना और उनकी वरिष्ठता पार्टी के लिये तो है ही। ऊपर से बेहड़ भले ही किच्छा के विधायक हैं लेकिन रुद्रपुर में भी वह तरावट चाहते हैं। दबदबे की उनकी चाह के बीच पार्टी ने महानगर अध्यक्ष पद पर जो नियुक्ति की उससे पार्टी की धड़ेबाजी खुलकर सामने आ गई। बेहड़ अपनी उपेक्षा की बात करते हुए भड़कते रहे। उन्होंने कहा कि पार्टी में पहली बार उपेक्षा महसूस कर रहा हूँ। कांग्रेस की हर कमजोरी को पकड़ने में भाजपा संगठन तैयार है। ऐसे में वरिष्ठ नेता अजय भट्ट सहित अन्य बेहड़ का हालचाल जानने पहुँच गये। इस मुलाकात को हवा मिली कि बेहड़ फिर से भाजपाई हो सकते हैं। पहले से टूटी कांग्रेस का और कचूमर न बन जाए इसके लिये पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष करन माहरा ने बेहड़ से मुलाकात कर फिलहाल वातावरण बनाया है।

बात यदि तिलकराज बेहड़ की ही करें तो इनकी राजनीति सीधे से पंजाबी वोटों के ध्रुवीकरण पर रही है। भाजपा लहर में हल्द्वानी से जीतने के बाद रुद्रपुर इनको रास आया। पृथक राज्य आन्दोलन में यह एकदम खिलाफ रहे जिसका हवाला पिघलता हिमालय के सम्पादक आनन्द बल्लभ उप्रेती ने अपनी पुस्तक 'उत्तराखण्ड आन्दोलन में गधों की भूमिका और इनका भविष्य' में भी किया है। यह भी बड़ा सच है कि समय के साथ धारा में बहने वाले आगे बढ़ते हैं। बेहड़ के साथ ही भी यही हुआ वह दमदार बनते चले गये। विधायक और मंत्री के अलावा वरिष्ठ नेता का ठप्पा उनके साथ है। ऐसे में कांग्रेस-भाजपा दोनों ही पार्टियां चाहती हैं कि वह तिलकराज को अपने पाले में रखें। मौका देखने वाले बेहड़ जी क्या करेंगे यह तो समय ही बतायेगा।

### यशपाल की सीख

कांग्रेस की तराई में चल रही गुटबाजी पर नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य ने कहा कि मेरा कोई गुट नहीं है। और न ही मैंने कभी गुटबाजी की सियासत की है। मैं कांग्रेस गुट का हूँ और कांग्रेस ने मुझे यहाँ तक पहुँचाया है।

श्री यशपाल ने अपने कार्यकर्ताओं और नेताओं को सीख दी है कि वह सार्वजनिक बयानबाजी बयानबाजी से बचें। जो कहना हो उसे पार्टी मंच पर कहें। यह हमारे आन्तरिक मामले हैं।

### भविष्य की राजनीति को लेकर चिन्ता!

किच्छा विधायक तिलकराज बेहड़ लगता है भविष्य की राजनीति को लेकर चिन्ता में हैं। वह कहते हैं कि सुपुत्र किच्छा में प्रतिनिधि के रूप में देखरेख कर रहा है। साथ ही यह भी कि पार्टी के कुछ लोग नीचा दिखाने के लिये 8-10 साल से उनके पीछे पड़े हैं। इसके लिये वह कुछ न कुछ साजिश करते रहे हैं। बेहड़ तो यहाँ तक कह चुके हैं कि उनके खिलाफ कांग्रेस का भी एक सब स्टेशन रुद्रपुर बन गया है। वह साजिश रचने वालों को बेनकाब करेंगे।

### दांवपेंच कम नहीं चल रहे

किच्छा विधायक बेहड़ कांग्रेस नेतृत्व के निर्णयों से नाराज हैं और दांवपेंच कम नहीं चल रहे। वह मौके की फिराक में लगते हैं। हालांकि वह यह भी कह रहे हैं कि साजिश करने वालों को बेनकाब करेंगे लेकिन तराई की राजनीति में अपना सिक्का जमाने के लिये उनकी छटपटाहट दिखाई दे रही है। सीएम पुष्कर सिंह धामी से पन्तनगर एयरपोर्ट पर मिलने गये बेहड़ ने मांगपत्र सौंपा परन्तु इस समय उनकी भेंट के मायने निकाले जा रहे हैं। इस बेहड़ कह रहे हैं कि पार्टी छोड़कर कहीं नहीं जायेंगे।

### तराई पहाड़ के नेता पीछे होते जा रहे हैं

पं.गोविन्द बल्लभ पन्त, पं. नारायणदत्त तिवारी, कृष्णचन्द्र पन्त जैसे कद्दावर नेताओं ने तराई को अपनी मुट्ठी में किया था, आज उसी तराई में पहाड़ के नेता पीछे होते जा रहे हैं। राजनीति के जहर ने पूरब वाद, पंजाबी वाद जैसा माहौल बनाते हुए दबंगई और धमाचौकड़ी मचानी शुरु कर दी है। उत्तराखण्ड राज्य की अवधारणा पर विचार करना चाहिये।

### ओऽऽईजा कुमाऊँ विश्वविद्यालय

# कहा जा रहा है कुलपति प्रो.जोशी का कार्यकाल उपलब्धियों भरा रहा

नैनीताल। कुविवि के कुलपति रहे प्रो. एन. के. जोशी अब बादशाहीथौल टिहरी गढ़वाल के कुलपति बन चुके हैं। कुमाऊँ विश्व विद्यालय की धमाचौकड़ी में चुपचाप समय काट चुके प्रो. जोशी का कार्यकाल उपलब्धियों भरा कहा जा रहा है। वाकेई यह उपलब्धि तो है ही कि बार-बार उनके खिलाफ उछाले जा रहे मामलों को हवा नहीं मिल सकी और वह करीने से अपना समय बिताकर दूसरे विवि के कुलपति बन चुके हैं। प्रचार-प्रसार के इस दौर में कई उपलब्धियां कुलपति जोशी की गिनाई जाती रही हैं। इसमें यह भी कि एचआर डीसी केन्द्र को देश में चौथा स्थान प्राप्त हुआ, इंडिया टुडे के सर्वे में 28 में रैंक में कुविवि रहा। इस पर कोई नहीं बोला कि कुविवि की परीक्षाएं और परीक्षाफल पटरी में नहीं आ पा रहा है। अन्दरखाने हुई भर्तियों पर मचे हल्ले पर पर्दा पड़ा हुआ है, दीक्षान्त समारोह में हुए बेतहाशा खर्चे पर उठी आवाज शान्त हो गई। जिस प्रकार एसएसजे विवि के कुलपति प्रो.नरेन्द्र भण्डारी के खिलाफ कोर्ट में मामला जाने के कारण उन्होंने पहले ही इस्तीफा दे दिया। वही दृष्य नैनीताल विवि के कुलपति का भी होने की बात कही जा रही थी और कोर्ट जाने की तैयारी भी हुई। बावजूद धीरे-धीरे सब साध लिये गये।

बड़े पदों में बैठने वालों और उनके पूरे वृत्तचित्र को जाने-अनजाने कई तरीके से परोसने की परिपाटी रही है लेकिन सच हमेशा सच होगा।

## उपनल कर्मचारी संघ का वार्षिक अधिवेशन

हल्द्वानी। उत्तराखण्ड उपनल संविदा कर्मचारी संघ का तृतीय द्विवार्षिक अधिवेशन एमबीपीजी कालेज के सभागार में हुआ। इसका शुभारम्भ लालकुआ के विधायक मोहन सिंह बिष्ट, पूर्व दर्जा मंत्री डा. अनिल कपूर व प्राचार्य डॉ. एन.एस. बनकोटी ने किया। अतिथियों ने कहा कि उपनल कर्मी प्रदेश की रीढ़ की हड्डी हैं। राज्य कर विभाग से हटाए गये कर्मचारियों को बहाल करने के लिये सीएम से मिलवाने तथा मांग पूरा करने में साथ देंगे। संघ ने कहा कि राज्य कर के 55 कर्मचारियों को हटाना अन्याय है, उन्हें रखा जाए। संघ के चुनाव में रमेश चन्द्र शर्मा पुनः अध्यक्ष चुने गये।

## कुमाऊँ द्वार महोत्सव का आयोजन

हल्द्वानी। एमबी इण्टर कालेज के मैदान में 5 दिवसीय कुमाऊँ द्वार महोत्सव का आयोजन किया गया। कृष्या फाउण्डेशन की ओर से आयोजित समारोह का शुभारम्भ मुख्य अतिथि रिटा. डीआईजी भगत सिंह टोलिया, विशिष्ट अतिथि नरेन्द्र सिंह टोलिया अधीक्षण अभियन्ता यूपीसीएल ने किया। संयोजन गोविन्द दिगारी का था। कार्यक्रम में विभिन्न प्रतियोगिताओं के अलावा मंचीय प्रस्तुतियां देखने को मिली।

## २०२५ तक अग्रणीय राज्य में शामिल होंगे

खटीमा। मुख्यमंत्री पुष्कर धामी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के मार्गदर्शन में उत्तराखण्ड सर्वश्रेष्ठ राज्य बनने के अपने संकल्प में आगे बढ़ रहा है। उत्तराखण्ड को सर्वश्रेष्ठ राज्य बनाने के लिये सरकार कार्य कर रही है और 2025 तक यह अग्रणीय राज्यों में शामिल होगा। सीएम ने तराई में धुंआधार भ्रमण किया। पन्तनगर, किच्छा, नानकमत्ता, सितारगंज, खटीमा के कई कार्यक्रमों में वह शामिल हुए।

## अभिभावक शिकायत करें, कार्रवाई होगी

बाजपुर/दिनेशपुर। पूर्व शिक्षा मंत्री व भाजपा विधायक अरविन्द पाण्डे का कहना है कि कुछ अधिकारियों की लापरवाही और निजी स्कूलों की मिलीभगत से मनमानी हो रही है। यदि किसी भी अभिभावक को कोई गड़बड़ लगे तो वह शिकायत करें, उसपर त्वरित कार्रवाई होगी। उत्तराखण्ड में एनसीईआरटी का पाठ्यक्रम लागू कर सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में नया आयाम दिया है।

## चारधाम यात्रा पंजीकरण सत्यापन

चमोली। चारधाम यात्रा पर आने वाले यात्रियों का पंजीकरण का तीन तीन तरीके से सत्यापन होना है। यात्री रिस्ट, बैंड, फिजिकल पंजीकरण की काफी या मोबाइल पर पंजीकरण क्यूआर कोड स्कैन कर सत्यापन कर सकते हैं। विभिन्न यात्रा मार्गों पर पंजीकरण के लिये केन्द्र बनाये गये हैं। धाम परक्यूआर कोड स्कैन कर टोकन मिलेगा।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

## ग्रीष्मकालीन पर्यटन, धार्मिक यात्रा सीजन की हार्दिक शुभकामनाएं-

**प्रेम सिंह मर्तोलिया**
फ्रेंड कलोनी
दोनहरिया
मल्ली बमोरी
हल्द्वानी

**खड़क सिंह जंगपांगी**
बलवन्त कलोनी
दोनहरिया
हल्द्वानी

**नवीन चौधरी**
जनरल स्टोर
निकट- हनुमान मन्दिर
द्वाराहाट

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारात घर
नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
मुनस्यारी

हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल एवं जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

### सप्ताह के पर्व

बैशाख शुक्ल पक्ष
25 अप्रैल- आदिगुरु शंकराचार्यजयंती
26 अप्रैल- श्रीगंगा सप्तमी
28 मई- देवी बगलामुखी जयन्ती
29 मई- श्रीजानकी नवमी

**Hotel Bala Paradise**
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Enjoy Beauty of Himalaya at
**MARTOLIA LODGE**
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

**धमोत होम स्टे**
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

**MARTOLIA FURNITURE**
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi
Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती
फोन/फैक्सः (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014, 9410713075,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com
पत्र व्यवहार के लिये पते-
जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)